नेशनल हाइवे क्रमॉक 07 कटनी जवलपुर केबीच रोड किनारे वाला गॉव जो कटनी जिला मुख्यालय से 15 कि. मी. की दूरी पर है, यहरोड के दो भागों में विभाजित है ।

नैगवॉ गॉव में श्रीमति उत्तरा बाई पति श्री राम सिंह ठाकुर वर्ष 2002 से जैविक खेती का प्रशिक्षण कटनी जिले के **KVK** पिपरौंध से लेकर अपने 8.50 एकड जमीन के कुछ हिस्से पर जैविक खेती के तौर तरीकों को अपनाना प्रारंभ किया था। निर्वतमान कलेक्टर श्री आर. आर. गंगारेकर जी एक दिन शाम को उनके खेत पहुँच गये, कि हमें भी जैविक तरीको से उगाई गयी सब्जी दे दो । जब खेत जाकर देखा कि उस समय का 5 किलो केचुआ से बनाइ गई वर्मी कम्पोस्ट और खेतों में बने नापेड के पिट और शाम ढलते ही गोबर गैस से जलने वाले बल्व दिखाई दे रहे थे । उन्होंने उत्तरा बाई को जैविक किसान घोषित कर दिया । समय बढता गया परन्तु मॉग और उत्पादन का संतुलन बनाते हुये यह परिवार जैविक खेती करने के लिए पीछे नही हटा, इनकी देखा देखी गॉव के 10–15 किसानों ने भी जैविक खेती के तौर तरीकों को सीखने के लिए उत्सुक हुये और महिला किसान उत्तरा बाई की तरह सब लोग अपने घरों और खेतों में केचुआ खाद की टंकी, गोबर गैस, जीवामृत खाद, मछलीखाद, गौमूत्र से मटका खाद बनाने की प्रक्रिया धीरे–धीरे आगे बढाने लगे ।

उत्तरा बाई के खेतों में सिर्फ जैविक खेती को बढावा देना बस नही था, उत्पादन को ध्यान में रखते हुये जैविक पद्वति को प्रमोट किया । जिसमें धान की नर्सरी से लेकर खेत में रोपाई का समय व पौधों की लम्बाई को ध्यान में रखकर खेतों में **SRI** पद्वति से रोपा जाता है । जिन पथरीली मुरूम वाले खेतों में वर्षा ऋतु की एक फसल लेना मुश्किल था, वहॉ अब कम पानी होने के बावजूद भी तीन फसलें लगाई जाने लगी है। रबी की फसल में गेहॅू, चना और मसूर खरीफ की फसल में धान मक्का आदि व सब्जी में बरबटी, करेला, प्याज, लहसुन, मिर्ची, आलू आदि प्रकार की सबिजयॉ उगाई जाने लगी । आज दिनॉक को जब हम उत्तरा बाई के खेत पहॅुचे तो बरबटी की तोडाई चालू थी, जबकि करेला, बैगन कई प्रकार की सब्जियॉ लगी हुई थीं ।

उत्तरा बाई के साथ सिर्फ इतना ही नही है, कि उन्होंने सिर्फ अपने गॉव व अपने खेतों में जैविक का उदाहरण प्रस्तुत किया है, उनके घर में प्रवेश करते ही आलमारी मे कई प्रकार के अवार्ड रखे दिखाई देते है । पंचायत, जिला व प्रदेश स्तर के भोपाल तक के अवार्ड प्राप्त है ।

उत्तरा बाई के पति **PGS** सिस्टम को भी जानते है, परन्तु वे कहते है, इसमें कई प्रकार की खामियॉ हैं, क्योंकि इसमें गलत लोगों के प्रवेश होने का खतरा है । जो जैविक खेती नही करते वे भी शामिल हो सकते है, या बाद में उत्पादन बढाने के लिए कुछ–कुछ नई तकनीक के माध्यम से आय बढाने के लिए तरकीब निकाल सकते हैं । इन्ही छोटी–छोटी भ्रान्तियों को सुलझाने किसानों को समझाने के लिए

हम सब मिलकर मानव जीवन विकास समिति के सक्षम कार्यकर्ताओं के सहयोग से भूमि–का के बैनर तले रहकर किसानों को लोगों को समझाने का अभियान चलाकर काम करने की सम्भावना बनती है । ताकि किसानों में जैविक खेती के प्रति रूझान और उनका सही उपयोग होकर सही दाम मिल सके, इस ओर प्रयास करने की सम्भावना बनती है ।

उत्तरा बाई के काम को देखकर सरकार ने गॉव में ही जैविक पाठशाला खेल दी है, जिसमें हर बुधवार को आसपास के कई किसान पढने आते हैं । और उत्तरा बाई उनको जैविक खेती के बारे में पढाई करवाती हैं । नैगवॉ गॉव की जैविक पद्वति को देखकर आसपास के कई गॉवों में भी इसी प्रकार की तकनीक अपनाने के लिए किसान तैयार हुये है, और तैयार हो रहे हैं । पास का ही गॉव बण्डा इसका उदाहरण बन रहा है ।

निर्भय सिंह

nirbhay1964@gmail.com